अध्याय- पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना

5.2 समस्या कथन

5.3 शोध के उद्देश्य

5.4 शोध प्रश्न

5.5 शोध के चर

5.6 शोध का परिसीमन

5.7 न्यादर्श

5.8 शोध में प्रयुक्त उपकरण

5.9 प्रदत्तों का विश्लेषण

5.10 शोध के मुख्य परिणाम

5.11 निष्कर्ष

5.12 शैक्षिक सुझाव

5.13 भविष्य के लिए शोध सुझाव

अध्याय –5

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना

सारांश किसी भी अध्याय को संक्षिप्त करने का प्रयास होता है। इसके द्वारा अध्याय को सरल रूप में समझा जा सकता है। इस अध्याय में लघु शोध का सारांश अध्याय –4 में दिये गये प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही अध्ययन के आगे संबंधित अध्ययन को विभिन्न क्षेत्रों में करने के लिए सुझाव देने का भी प्रयास किया गया है।

5.2 समस्या का कथन

"प्रारंभिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय साक्षरता एवं पर्यावरण के प्रति आचरण का अध्ययन।"

5.3 शोध के उद्देश्य

- ❖ प्रांरभिक विद्यालय के विद्यार्थियों में पर्यावरण ज्ञान का अध्ययन करना।
- ❖ प्रांरभिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
- ❖ प्रांरभिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण ज्ञान एवं पर्यावरण जागरूकता के मध्य संबंध जानना।
- ❖ प्रांरभिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय साक्षरता स्तर का अध्ययन करना।
- ❖ प्रांरभिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यारणीय साक्षरता द्वारा उनके प्रभावित पर्यावरण के प्रति आचरण के संचालित होने का अध्ययन करना।

5.4 शोध प्रश्न

(1) प्रांरभिक स्तर (कक्षा 8वीं) के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय ज्ञान का क्या स्तर है ?

(2) क्या प्रांरभिक स्तर के विद्यार्थी पर्यावरण के प्रति जागरूक है ?

(3) क्या प्रांरभिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय ज्ञान एवं पर्यावरणीय जागरूकता के मध्य सार्थक संबंध है ?

(4) क्या प्रांरभिक स्तर के विद्यार्थी पर्यावरणीय साक्षरता स्तर के आधार पर समान है ?

(5) क्या प्रांरभिक स्तर के विद्यार्थियों का पर्यावरण के प्रति आचरण उचित है ?

(6) क्या प्रांरभिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय साक्षरता से पर्यावरणीय आचरण संचालित होता है ?

5.5 शोध के चर

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित स्वतंत्र व आश्रित चर है –

(1) स्वतंत्र चर – प्रारंभिक स्तर के विद्यार्थी

(2) आश्रित चर –

(i) पर्यावरणीय साक्षरता

(ii) पर्यावरण के प्रति आचरण

5.6 शोध की परिसीमन

(1) प्रस्तुत शोध प्रांरभिक स्तर के कक्षा 8 के विद्यार्थियों तक सीमित है।

(2) अध्ययन मध्यप्रदेश राज्य के टीकमगढ़ शहर के शासकीय विद्यालय तक सीमित है।

(3) पर्यावरणीय साक्षरता हेतु दो आयाम पर्यावरणीय ज्ञान तथा पर्यावरणीय जागरूकता को आधार बनाया गया है।

(4) अध्ययन कुल 40 विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।

5.7 न्यादर्श

म.प्र. राज्य के टीकमगढ़ नगर के शासकीय विद्यालय को न्यादर्श हेतु चयनित किया गया । जिसमें 40 विद्यार्थियों को लिया गया।

5.8 शोध में प्रयुक्त उपकरण

संबंधित अध्ययन के लिए प्रदत्तों के संकलन हेतु निम्न प्रकार के साधनों का प्रयोग किया गया –

(1) **पर्यावरणीय ज्ञान परीक्षण** – पर्यावरणीय ज्ञान परीक्षण हेतु स्वनिर्मित प्रश्न पत्रों का प्रयोग किया गया।

(2) **पर्यावरण जागरूकता परीक्षण** – डॉ. ताज हसीन जागरूकता स्केल का मानक उपकरण के रूप में उपयोग किया गया।

(3) **पर्यावरण के प्रति आचरण** – पर्यावरण के प्रति आचरण मापन हेतु स्वनिर्मित अवलोकन सूची का प्रयोग किया गया।

5.9 प्रदत्तों का विश्लेषण

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए प्रतिशत, शतांश, सहसंबंध सांख्यिकी एवं तर्क संगत विश्लेषण का उपयोग किया गया है।

5.10 शोध के मुख्य परिणाम

(1) प्रांरभिक स्तर के (कक्षा 8वीं) के विद्यार्थियों का पर्यावरणीय ज्ञान औसत से अधिक है।

(2) प्रारंभिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता सामान्य है।

(3) प्रारंभिक स्तर के विद्यार्थियों का पर्यावरणीय ज्ञान एवं पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक संबंध है।

(4) प्रारंभिक स्तर के विद्यार्थियों का पर्यावरणीय साक्षरता स्तर असमान है।

5.11 निष्कर्ष

प्रारंभिक स्तर के विद्यार्थियों का साक्षरता स्तर असमान है एवं पर्यावरण के प्रति आचरण पर्यावरणीय साक्षरता द्वारा संचालित नहीं होता है। अतः इस अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि केवल पर्यावरणीय शिक्षा प्रदान कर साक्षर करना ही पर्यावरण संरक्षण हेतु पर्याप्त नहीं है वरन् आवश्यकता यह है कि यह साक्षरता उनकी आचरण में परिलक्षित हों ऐसे प्रयास किये जाने चाहिये।

5.12 शैक्षिक सुझाव

विद्यार्थियों को पर्यावरण के संबंध में अधिकाधिक जानकारी प्रदान करने हेतु केवल पुस्तकालीन ज्ञान देकर औपचारिक पर्यावरणीय शिक्षा प्रदान नहीं करनी चाहिए वरन् उन्हें क्षेत्र में ले जाकर पर्यावरण से रूबरू कराकर पर्यावरण शिक्षा दी जानी चाहिए। उदाहरण के लिए मिट्टी, वनस्पति, जल आदि के संबंध में जानकारी एवं उनके गुण बच्चों को दिखाकर उन्हें अनुभव कराकर दिये जाना चाहिए।

पारिस्थितिकी अवयवों से अंर्तक्रिया द्वारा विद्यार्थी को यह ज्ञान कराना कि समय के अनुसार पर्यावरण मे परिवर्तन होते हैं और हमारा उद्देश्य इसको अपने लिए अधिक से अधिक उपयोगी बनाये रखना एवं इनका संरक्षण करना है।

विद्यार्थियों को इस प्रकार पर्यावरणीय परिवेश में ले जाकर दी जाने वाली पर्यावरणीय शिक्षा द्वारा ही सही साक्षरता स्तर प्राप्त कर पाना संभव है क्योंकि वे पर्यावरण से रूबरू होने पर प्राप्त पर्यावरणीय शिक्षा से पर्यावरण के संगत आचरण अपने दैनिक क्रियाकलाप में शामिल कर पायेंगे। वास्तविकता में तभी वे समझ पायेंगे कि हम और हमारा पर्यावरण एक दूसरे से प्रभावित होते हैं और एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व संभव नहीं है।

"पर्यावरणीय शिक्षा के उद्धेश्यों का निर्धारण केवल साक्षरता की दृष्टि से नहीं बल्कि आचरण की दृष्टि से ही फलीभूति किये जाने की अत्यंत आवश्यकता है।"

5.13 भविष्य के लिए शोध सुझाव

(1) प्रारंभिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरणीय साक्षरता का तुलनात्मक अध्ययन ।

(2) प्रारंभिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय साक्षरता का तुलनात्मक अध्ययन।

(3) शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का पर्यावरण के प्रति आचरण का तुलनात्मक अध्ययन।

(4) छात्रावासी तथा गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की पर्यावरणीय साक्षरता एवं पर्यावरण के प्रति आचरण का तुलनात्मक अध्ययन।

(5) छात्र एवं छात्राओं के पर्यावरण के प्रति आचरण का तुलनात्मक अध्ययन।